अमृत प्रार्थना
हनुमानजी से

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा हनुमान जी से की गई प्रार्थना...
सभी हाथ जोड़कर के मन में हनुमान जी का स्मरण करेंगे।
प्रार्थना करेंगे।

हे राम भक्त हनुमान जी! आप प्रभु श्रीराम के परम प्रिय भक्त हैं। आप परम विवेकवान हैं! परम बुद्धिमान हैं! महा बलशाली है! महावीर है !और भगवान के परम प्रिय
सेवक हैं!

हम सभी भक्त आप की शरण में आए हैं।आप हमारे शरीर को बलिष्ठ कीजिए। हमारे शरीर को निरोगी कीजिए। आपकी इंद्रिया संयमित है। आप जितेंद्रिय है!

हे प्रभु! हम आपकी शरण में आए हैं। हमारी इंद्रियों पर भी संयम कीजिए। हमारी इंद्रियां हमारे बस में नहीं । आप मनोजयी हैं! मन पर आप की विजय है। यह मन हमारा कहना नहीं मानता। आप हमारे मन को हमारे वश में कीजिए। हमारे मन को निर्मल कीजिए। आप बुद्धिमान हैं! बुद्धिमतां वरिष्ठं! हम आप हमारी बुद्धि को सूक्ष्म कीजिए। हमारी बुद्धि, भौतिक और आध्यात्मिक विषयों को धारण करने योग्य हो।आपकी अहंकार पर विजय है। आप निराभिमानी हैं!वैसे ही हमारे अभिमान को भी नष्ट कीजिए और हमें भी निराभिमानी बनाइए।

हम सभी भक्त आप की उपासना करते हैं। गुरु जी के कहने से हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं। इस हनुमान चालीसा के पाठ को हम आप को ही समर्पित करते हैं और जिस प्रकार आप के हृदय में प्रभु श्री राम- माता सीता सहित सदा विराजमान हैं, वैसे ही हमारे इष्ट भी हमारे हृदय में सदा विराजमान हों। हमारे भगवान भी हमारे हृदय में विराजमान हों।

ऐसी हम आप से प्रार्थना करते हैं!
प्रार्थना करते हैं! प्रार्थना करते हैं !
ऊँ शांति शांति शांति